ISSN : 2320-8309

भोजपुरी जनपद

अंक-2

भोजपुरी अध्ययन केन्द्र के छमाही पत्रिका

सर अनिरुध्द जगन्नाथ फेर से मॉरीशस के प्रधानमंत्री हो गइलीं। उहां के बधाई। ६ दिसम्बर २००९ के अनिरुध्द जगन्नाथ जी भोजपुरी अध्ययन केन्द्र में आइल रहलीं। ओह समय उहाँ के राष्ट्रपति रहलीं। अनिरुध्द जगन्नाथ जी केन्द्र में भाषण देत के कहले रहलीं- ''हमनी के पुरबज भारत से गिरमिट होके गइलन जा आ उहां जा के अब हमनी के गवरमिन्ट हो गइलीं जा। भोजपुरी आपन ह, सभा अपनापन ह, एके बोले में सरमइला क काम नइखे। अब त भोजपुरी के प्रचार खातिर हमनी का पास बहुत साधन हो गइल बा। हमनी का मॉरीशस में भोजपुरी खातिर कई गो संगठन आ संस्थान बनवले बानी जा। उनके सरकार की ओर से फिनांसियल मदद भी देहल जाता। जब मॉरीशस नीयर छोट देश में भोजपुरी खातिर हमनीं का सतना कर सकत बानी जा त भारत में बहुत कुछ कइल जा सकेला। सकरा खातिर हमरा ओर से जेवन मदद होई हम करब।''

अंक-2
जुलाई - 2015

ISSN : 2320-8309

संरक्षक
गिरीश चन्द्र त्रिपाठी
कुलपति
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी

परामर्श मण्डल
कुमार पंकज
अशोक सिंह
बशिष्ट नारायण त्रिपाठी
प्रकाश उदय

प्रधान सम्पादक
सदानन्द शाही

सम्पादक
अवधेश प्रधान

सम्पादन सहयोग
समीर कुमार पाठक
बृजराज कुमार सिंह

प्रकाशक
भोजपुरी अध्ययन केन्द्र
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

प्रो. ज्योतिष भट्टाचारजी द्वारा बनाया गया स्केच-1974

विजय सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, दृश्य कला संकाय,
बी.एच.यू., वाराणसी के सौजन्य से प्राप्त
कवर डिजाइन एवं चित्रांकन
कृष्णा सिंह, एम.एफ.ए. (अप्लाईड आर्ट्स)

मूल्य - 50/- (पचास रुपये)

मुद्रक :
आदर्श ऑफसेट
शॉप नं० 193-94, धर्मसंघ, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी
ई-मेल : mangaleshwar.0123@gmail.com
Mob.: 9839633939

भोजपुरी जनपद
भोजपुरी अध्ययन केन्द्र,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005
ई-मेल : bhojpuri.ak.bhu@gmail.com
फोन नं० : 0542-6703020

कामना करता हूँ कि भोजपुरी का एक अलग विभाग बने

– महाराज कर्ण सिंह

भाइयो और बहनो! मैं आप सबको बधाई देता हूँ कि आपने प्रो. वासुदेव शरण अग्रवाल की बात कही, जो महान बुद्धिजीवी थे। मैं जब पहले 1961 में कुलाधिपति बना था उस समय महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराज जी थे और प्रो0 वासुदेव शरण अग्रवाल जी थे। दोनों के दर्शन मैंने किये। आपको देर लग गयी लेकिन आपने उनके विचारों को आत्मसात करते हुए पत्रिका निकाल दी। जैसा मैंने कहा कि देश की और हमारी संस्कृति की एक अद्‌भुत विशेषता है कि हमारे यहाँ अनेक भाषाएँ हैं। विश्व में आप कहीं भी चले जाइए, हो सकता है, वहाँ दो भाषाएँ या तीन भाषाएँ होंगी। लेकिन भारतवर्ष ही ऐसा है जहाँ छब्बीस भाषाएँ तो हमारे संविधान में हैं ही। अगर ये दूसरी भाषाएँ गिनी जाएँ तो सैकड़ों हो जाती हैं और वे ही एक स्फूर्ति का कारण भी हैं हमारी संस्कृति की। कुछ लोग कहते हैं कि समस्या है; समस्या नहीं है ये, ये तो भगवती की देन है। मैं तो हर एक भाषा को माँ सरस्वती की वाहिनी मानता हूँ और सरस्वती की इतनी कृपा भारतवर्ष पर हुई है कि केवल एक या दो भाषाओं तक हमें सीमित नहीं रखा। अनेक भाषाएँ हैं और अनेक भाषाओं में अभी तक रचनात्मक कार्य किया जा रहा है। ये कोई मृत भाषा या पुरानी भाषा नहीं हैं। ये व्यवहार की भाषा हैं और उनमें भोजपुरी का अपना महत्व है। मैं देख रहा हूँ कि यह हिन्दी का अपना महत्व है। मैं देख रहा हूँ कि पिछले आठ-दस वर्षों से भोजपुरी का काफी प्रचार-प्रसार हो रहा है। भोजपुरी में फिल्में भी बन रही हैं और मैं मानता हूँ कि यह हिन्दी का एक महत्वपूर्ण अंग है और एक रोजमर्रे की भाषा, बोलचाल की भाषा, लाखों करोड़ों लोगों की भोजपुरी है। हमारे यहाँ, हमारी ही मातृभाषा डोंगरी है। बड़ी मुश्किल से, बड़े आन्दोलन करने के पाश्चात् इसे हम लोग संविधान में सम्मिलित करवा पाये हैं। पहली बार मैं भी धरने पर बैठा था। वैसे तो दो ही मिनट, लेकिन निमित्त मात्र बैठा। हर एक को अपनी-अपनी भाषा से प्रेम होता है। लेकिन मुझे तो लगता है कि हर एक भाषा से प्रेम होना चाहिए क्योंकि भाषा एक दैविक गुण है। मैं अपनी बात कहूँ- डोंगरी मेरी मातृ भाषा है, मुझे इससे प्रेम है। पंजाबी हमारे पूर्वजों की भाषा है, मुझे इससे प्रेम है। उर्दू हमारे राज्य की भाषा है, मुझे इससे प्रेम है। हिन्दी हमारी राष्ट्रीय भाषा है, मुझे इससे प्रेम है, संस्कृत धर्म की भाषा है, मुझे इससे प्रेम है। अंग्रेजी विश्व की भाषा है, मुझे इससे प्रेम है। तो